इस पहल को इंडिया फाउंडेशन ऑफ़ दी आर्ट्स के प्रोजेक्ट 560 प्रोग्राम के तहत समर्थन मिला है।

बेवरू

जुलाई 2019
बैंगलोर
केवल 5 रुपये

Vol. 2

प्यार, इज़्ज़त, संघर्ष

घरेलु मज़दूर, सेक्स वर्कर, सफाई कर्मचारी और कपड़ा फैक्ट्री की यूनियन और संगठन के सहयोग के साथ

मज़दूरों के लिए एक सरकार?

2019 के चुनाव हाल ही में ख़त्म हुए हैं और हम सब इसका परिणाम जानते हैं। ऐसा बहुत अरसे बाद हुआ कि कोई एक पार्टी या नेता इतने सारे वोटों से एक मज़बूत सरकार बना पाया हो। गठबंधन की कई सरकारों के बाद ऐसा लगता है कि लोगों के वोट करने के रवैय्ये में कुछ बदलाव आया है। क्या है ये बदलाव? और इसका मतलब क्या है?

एक ज़रूरी वजह ये है कि इस सरकार से अधिकतर लोगों की समस्याएँ तो बढ़ी हैं लेकिन चुनाव जीतने के इरादे से कुछ विशेष समूहों के लिए काफी योजनाएँ भी निकालीं गयी हैं। उज्ज्वला, आयुशमान, आवास योजना आदि जैसी योजनाओं के तहत केंद्रीय सरकार ने सीधा लोगों के बैंक खाते में पैसे जमा करना शुरू किया। देशभर में केंद्रीय सरकार ने लोगों के बैंक खाते में सीधा पैसा बाँटा। इस तरह की नयी राजनीति मुमकिन है क्योंकि अब हर आदमी और घर, जुड़ा है मोबाइल नंबर और आधार कार्ड से, और ये जानकारी सरकार के पास है। क्या अब यही भविष्य है जहां कुछ लोगों को पैसा दिया जाएगा जिससे कि बाकी लोगों से आज्ञा का पालन करवाया जा सके?

1990 में मण्डल के बाद, काफी OBC राजनेता उभर कर आए थे और उन्होने अपने समुदाय की राहत और फायदे के लिए काम भी किया था। लेकिन अब ये विकास भी पीछे जा चुका है क्योंकि पिछले 15 सालों के मुक़ाबले, प्रबल जाति की संसद में इस वक़्त सबसे ज़्यादा सीट हैं। OBC, दलित और आदिवासी का देश में एक विशाल बहुमत है लेकिन प्रबल जाति की छोटी-सी संख्या ने केन्द्रीय सरकार के सभी उच्च-पदों को अपने पाले में रखने का काम कर लिया है। क्या अब यही भविष्य है जहां प्रबल जाति की छोटी-सी संख्या से ही राजनेता बनेगें और बहुजन समाज का प्रतिनिधित्व करेंगें?

पिछले दो दशक में, पब्लिक और प्राइवेट क्षेत्र में पूरे समय की स्थिर नौकरी में कोई बढ़ौतरी नहीं हुई है बल्कि कई जगह कम ही हुए हैं। पुरानी व्यवस्था की बजाय, अब हमारे पास है पार्ट-टाइम नौकरी, वो भी ठेके पर। प्राइवेट क्षेत्र में ऊबर और स्वीग्गी जैसी कंपनियां लोगों को नौकरी तो दे रही हैं लेकिन वहाँ ना तो नौकरी की कोई सुरक्षा है ना ही तनख़्वाह पर कोई नियंत्रण। एक पेचीदा सिस्टम के तहत जहां कुछ ज़्यादा फायदे को आपके अच्छे काम और ग्राहक की मांग के साथ जोड़ दिया जाता है। टैक-नोलजी और स्मार्टफोन की मदद से काम करने के तरीके तो बदल गए हैं, लेकिन मुनाफ़ा कमाने का तरीका और मालिकों का नियंत्रण करने का तरीका अभी भी वही है। क्या अब यही भविष्य है जहां मज़दूर फोन ऐप्स के मोहताज बन जाएंगे और मालिक-लोग अदृश्य हो जाएंगे, जिससे कि मज़दूर अपने हक़ भी ना माँग सकें?

इन सब के बावजूद, गारमेंट कर्मचारियों ने कर्मचारी भविष्य निधि (EPF) के मामले में कर्नाटका में हिम्मत और शक्ति दिखाई। कुछ ही समय में, EPF के नए नियम को सरकार को बदलना ही पड़ा। बीजेपी सरकार ने कहा है कि व्यापारियों के लिए व्यवस्था आसान बनाने के लिए वो फिर से श्रम कानून में फेरबदल कर सकते हैं। मज़दूरों के लिए और भी ज़्यादा मुश्किल होगा साथ आना और अपने हक़ की माँग करना। विभिन्न क्षेत्रों के मज़दूरों को काम के समय अलग रखने की कोशिश के बावजूद क्या वो साथ आ सकते हैं? कब और कैसे मज़दूर इस तरह के गठबंधन बना सकते हैं या साथ आ सकते हैं जब ज़्यादातर ज़िंदा रहना ही एक संघर्ष है?

कुछ सवालों के जवाब आसान नहीं होते पर इसका मतलब ये नहीं कि हम वो सवाल पूछना ही बंद कर दें।

बेवरू अखबार, अलग-अलग क्षेत्रों के मज़दूरों के सवाल और विचारों को पेश करने की एक कोशिश है। हमारा मकसद है एक ऐसी जगह बनाना जहां विचारों का आदान-प्रदान हो और मज़दूरों के बीच बातचीत हो सके। ये अखबार आधारित है मज़दूरों की रोज़ाना की ज़िंदगी, उनकी इच्छा, सपने और संघर्ष पर। बेवरू सचेत है शहर में काम करने वाले वर्ग के बीच अलग-अलग तरह के अंतर और समानता के बारे में जो उनके जीवन को कई पहलू प्रदान करता है।

सबसे साफ हाथ वहीं है जो लगातार काम करते हैं

फर्श पर चिकनाई। डस्ट्बिन से कूड़ा बाहर गिरता हुआ। वो घर में घुसती है, एक झाड़ू के साथ।

"तुमने लॉकर में से 15 लाख रुपये चुराये। पिछले हफ्ते खरीदे हुए चाँदी के बर्तन तुमने चुराये। मेरी 19000 रुपये की सिल्क की साड़ी तुमने चुराई।"

"नहीं, मैंने कुछ नहीं चुराया, मुझ पर विश्वास कीजिये।"

उसने चाहे यहाँ 8 साल काम किया हो लेकिन वो अब भी उस पर विश्वास नहीं करते। उसने क्यों न एक ही महीने यहाँ पर काम किया हो पर उन्हे लगता है कि इतना समय काफी है उसके लिए लॉकर तोड़ कर पैसे चुराने के लिए। उसकी गरीबी उनके हर आरोप को सही साबित करने के लिए काफी है।

थाने में शिकायत दर्ज हो चुकी है। उसे बेरहमी से खींच कर पुलिस स्टेशन ले जाया गया। उसे अपनी सफाई में कुछ भी बोलने का मौका ना देते हुए, उसे जेल में बंद करके पीटा गया।

‘बेवरू' समर्पित है बैंगलोर के मज़दूरों की आवाज़, नज़रिया और अनुभवों के लिए। ये अखबार खासकर असंगठित मज़दूरों के लिए है। अगर आप कविता, गाना, मज़दूरों के बारे में लिखते हैं तो हमारे साथ बाटें। और जानकरी के लिए आप हमे लिखकर भेज सकते हैं- bevarupaseena@gmail.com या फोन कर सकते हैं 6361957626.

सारे लेख मरा टीम के द्वारा मज़दूरों के साथ चर्चा करके लिखे गए हैं।

हिन्दी अनुवाद- अनुषी अग्रवाल
चित्र: करेंन हैडॉक
डिज़ाइन - जयसिम्हा. सी

उसके घुटनों में दर्द होता है जब वो रसोई के फर्श से धब्बे साफ करती है। उसके हाथ सूज जाते हैं बरतनों पर जमी हुई गंदगी हटाते-हटाते। कमरे में अभी भी सुबह की चाय की महक आ रही है, वो घड़ी की तरफ देखती है सोचते हुए कि मालकिन आज उसे चाय देंगी या नहीं।

“अच्छा सच बताओ, इतना पैसा देख कर मन में लालच तो आएगा ही ना?”, एक पुलिसवाले ने ताना मारते हुए कहा।

मार खा-खाकर उसके शरीर से अब खून निकल रहा है लेकिन उसने फिर भी झट से ना में सर हिला दिया। वो पुलिस स्टेशन से बाहर निकलती है, उसका शरीर सूजा हुआ है और थका हुआ है। उसके दोस्त कांताअम्मा, लक्ष्मी और राधिका को भी उनके मालिकों ने चोरी के झूठे इल्ज़ाम में फंसाया है लेकिन उसे कभी नहीं लगा था कि किसी दिन उसके साथ भी ऐसा ही होगा।

अजीब बात है, कि बाथरूम साफ करने के बाद ही उसको भूख लगनी शुरू होती है। अगर उसका पति घर के काम में थोड़ी मदद कर दे, तो वो भी सुबह थोड़ा समय निकाल ले अपने लिए खाने का डब्बा बांधने के लिए।

वो सीधा जाती है घरेलू कामगर की यूनियन के पास। उसे पता है वहाँ उसे मदद मिलेगी। कुछ ही देर में, गुस्से से भरे लगभग सौ कर्मचारी मालिक के घर पहुँचते हैं। उस वक़्त वो खुद पर पूरी कॉलोनी की नज़रें महसूस कर सकती है। उनमे से किसी के भी घर अब उसे काम मिलने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। अगर वो आज की यह जंग जीत भी जाती है, उसे लग रहा है कि वो पहले ही हार चुकी है, अपनी गरिमा, इज़्ज़त और सबसे ज़रूरी, इस इलाके में अब काम करने का मौका।

जैसे वो पोछे को साबुन के पानी में भिगोती है, उसकी नज़र पड़ती है मेज़ पर रखे अखबार पर। उसे कुछ अक्षर समझ आते हैं। लगता है उसका पढ़ना सीखने का फल दिखाई दे रहा है। उसकी सबसे बड़ी बेटी ही उसकी गुरु है। उसने चाहे पढ़ाई ना की हो, लेकिन उसके बच्चे शिक्षा के अभाव में नहीं जिएंगे।

कुछ विरोध के बाद काफी चर्चा शुरू हुई। मालिकलोग ने इसे सुनने से मना कर दिया लेकिन आखिरकार उन्हे झुकना ही पड़ा।

और फिर वो बाल्कनी साफ करने जाती है। चिड़िया की बीट से सारी जगह भरी पड़ी है, लेकिन वो धैर्य के साथ एक-एक टाइल साफ करती है। ये काम ज़रूरत से ज़्यादा ही समय ले रहा है। लगता है आज उसकी सिलाई की क्लास छूट जाएगी।

“ठीक है हम केस वापिस लेते हैं।”
“हमे पता चला कि दरअसल हमारे एक रिश्तेदार ने ही पैसे चुराये थे।”
“इसमे तुम्हारी गलती नहीं है। वो तो कोई और था।”

ये बहुत ही आसान शब्द हैं जो उसके गहरे घाव को कभी भर नहीं पाएंगे। मालिकलोगों की नज़र में यह एक बहुत ही छोटा-सा मामला है। पर क्या किसी को कभी पता चलेगा कि एक AC वाले कमरे में बैठकर, माफी के चंद शब्द फुसफुसाने से अफ़वायें शांत नहीं होती।

वो अभी धुले हुए कपड़ों पर इस्त्री करती है। आखरी कपड़े पर सिलवट को सीधा करते हुए वो राहत की सांस लेती है। वो अपने माथे से पसीना पोछते हुए खिड़की के पास जाकर बैठ जाती है। जैसे बाहर की ठंडी हवा धीरे-धीरे उसके चहरे पड़ती है, वो झुक कर सामने वाले पेड़ से अपने बालों के लिए पीला वाला फूल तोड़ती है।

पुलिस स्टेशन, वकील और यूनियन के ऑफिस के कई चक्कर काटने के बाद, आखिरकार उसका केस बंद हो गया।

वो घर पहुँचते ही अपने पति को ज़मीन पर सोते हुए देखती है।

वो दो हफ्ते ही काम करता है और महीने के बाकी दिन सोता है। और अच्छा ही है कि वो सो रहा है। कम-से-कम उनकी महनत से कमाए हुए पैसों को शराब पर तो नहीं उड़ा रहा।

वो हौले पैरों से चलकर रसोई तक जाती है और दोपहर का खाना बनाना शुरू करती है।

उसके बच्चे स्कूल से वापिस आ गए हैं। वो उन्हे खाना खिलाती है और उनके पास बैठकर उनके दिन भर का हाल सुनती है। और फिर एक पल के बाद, ज़िंदगी इतनी मुश्किल भी नहीं लगती।

मशीन जैसी चीख

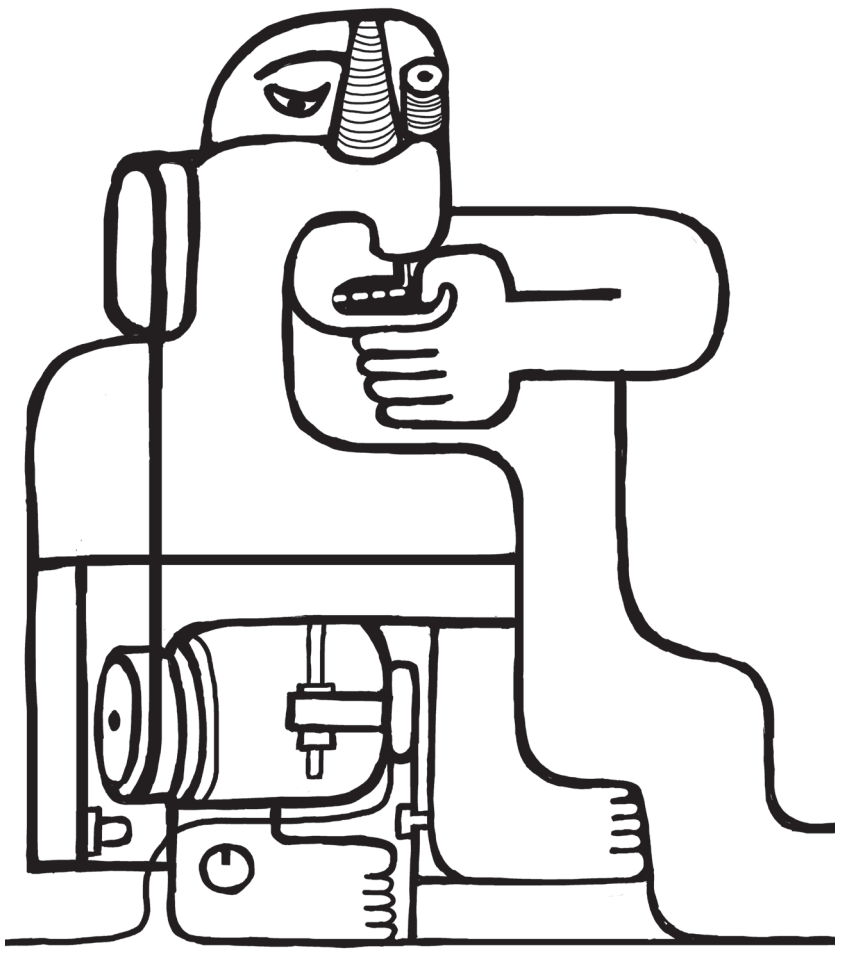

"बेएगा-बेएगा... ऐ, जल्दी करो, काम करने का मन नहीं है क्या?" बेएगा-बेएगा, जल्दी--जल्दी। और पीछे से रेडियो FM पर पुराना हिन्दी गाना बजता है, 'हर किसी को नहीं मिलता यहाँ प्यार ज़िंदगी में...' सामने से मास्टर चिल्ला रहा है कि कपड़े का पीस ठीक से नहीं बना और मेरे दिमाग में श्रीदेवी सफ़ेद साड़ी में गा रही है। दिमाग में पूरा कन्फ़्युशन चल रहा है। मास्टर की सुनू या श्रीदेवी को। यही चलता रहता है हमारी फ़ैक्टरी में, गाना सुनो, गाली सुनो।

फ़ैक्टरी की तेज़ सफ़ेद चुभती हुई लाइट में सब सिर नीचे किए काम किए जा रहे हैं। मशीन की आवाज़, कैंची की आवाज़, मास्टर की आवाज़। मेरे माँ-बाप भी यहीं काम कर रहे हैं, अजीब है, वो क्या कर रहे हैं यहाँ? वो यहाँ हैं तो गाँव में भाई-बहन के साथ घर पर कौन है? सब तेज़ी से हाथ चला रहे हैं, ना किसी से बोलना, ना किसी को देखना, बस फटाफट काम करना।
तभी एक आदमी का मेरे पास में आकर लेटने का एहसास। मैं चौंक कर उठी तो देखा मैं थक कर मशीन पर ही सो गयी थी, पर ये आदमी कौन है? मैं चिल्लाई, मास्टर ने पुलिस बुलायी। लेकिन उन्होने मुझे ही हथकड़ी लगायी।

ले गए पकड़ कर फ़ैक्टरी के एक कोने में, उस कमरे से चीखें सुनाई देती हैं।
काला-अंधेरा कमरा और मशीन जैसी चीख। वहाँ मेरी जैसी और भी बहुत लड़कियां क़ैद हैं। मुझे एक पतला रास्ता दिखा बाहर निकलने का, नींद में उसी पर गिरते-संभलते चल दी। यही सोचती रही इस कंपनी को कैसे बदनाम करूंगी, कैसे इस कंपनी की सच्चाई सबके सामने लाऊँगी।

जब आँख खुली तो मेरी सांस फूल रही थी। अगले दिन जब फ़ैक्टरी गयी तो कुछ अजीब-सा लगा। रात की बात सोच कर मुस्कुराती रही, गाली सुनती रही, काम

करती रही।

फ़ैक्टरी का पहला दिन अच्छा होता है, सपने जैसा। कोई नहीं चिल्लाता कि जल्दी काम करो। लेकिन धीरे-धीरे वो एक डरावने सपने में बदलने लगता है, जहां सिर्फ गाली सुनाई देती है और मशीन की आवाज़, जहां खुद की चीख भी सुनाई नहीं देती, सिर्फ महसूस होती है।
ऐसे सपनों के बाद पसीना छूटता है।

ये लेख गारमेंट फ़ैक्टरी में काम करने वालों के सपनों की कहानियों पर आधारित है।

हमे अपनी तनख़्वाह समय पर चाहिए

पौरकर्मिका के द्वारा विरोध, 29 मई, 2019

बैंग्लोर वार्ड के पौरकर्मिका इखट्टे हुए बीबीएमपी कॉर्पोरेट ऑफिस के सामने इन मांगों के साथ:

• लगातार और पूरा निर्धारित पैसा दिया जाए।
• ID कार्ड, ESIC, PF और पेमेंट रसीद की सुविधा।
• सुरक्षित उपकरण की सुविधा जैसे कि दस्ताने, जूते, मास्क।
• शौचालय का निर्माण।
• कर्मचारी कॉलोनी में अच्छे-साफ खाने की लगातार पहुँच।
• इखट्टे किए हुए कूड़े को लेकर जाने के लिए औपचारिक वाहन दिया जाए। रोज़ आने-जाने में भी मदद।
• बाइयोमेट्रिक एट्टेंडेंस सिस्टम को नियमित रखना जो अभी सभी कर्मचारियों को हर महीने चार दिन छुट्टी पर दिखाता है, जिसकी वजह से तनख़्वाह कट कर मिलती है।
• पेंशन प्लान

इनका समर्थन किया था आल्टरनेटिव लॉ फोरम (ALF, बैंगलोर) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) ने।

सड़क, उसका आदेश

मीना से मिलिए, यह वार्ड 58, न्यू टिप्पसंद्रा की एक गर्वपूर्ण पौरकर्मिका है। वो सीधी खड़ी होती है और झाड़ू को अपनी उँगलियों के बीच में से धीरे से सड़क पर फिसलने देती है। अपनी बीबीएमपी की हरी जैकेट से माथे का पसीना पोछती है। मीना अपनी घड़ी देखती है।

एक: एक साल तक छोड़ कर जाने के बाद, आज एक महिना पूरा हुआ है उसके पति को वापिस आए हुए।

दो: पौरकर्मिका कर्मचारियों को जोड़ियों में बाँट दिया गया है, शहर को बहतर बनाने के लिए, दो औरतें साथ काम करती है।

तीन: उसका दिन सुबह तीन बजे शुरू होता है: घर के काम, उसका काम शुरू हो चुका है।

चार: वो घर शाम 4 बजे पहुँचती है पर उसका दिन अभी ख़त्म नहीं हुआ है।
पाँच: पाँच पेट पालने हैं: चार पढे-लिखे बच्चे और उसका पति।

छह: बीबीएमपी के अनुसार पौरकर्मिका को अपनी एट्टेंडेंस एक दिन में तीन बार दर्ज करनी होगी वरना उनकी तंख्वाह कट जाएगी। मीना और उसके दोस्त 1 किलोमीटर चलकर जाते हैं अपनी एट्टेंडेंस दर्ज करने। वो एक दिन में 6 किलोमीटर चलती है सिर्फ अपनी पूरी तंख्वाह पाने के लिए।

सात: सुबह का सातवा घर है जिसने अपना कूड़ा अलग-अलग नहीं किया है- बच्चों के गंदे डाईपर्स, पैड्स, सड़ी हुई सब्ज़ियाँ, माँस, प्लास्टिक, मकड़ी के जाले। मीना ये सब एक बार तो साफ कर देगी लेकिन वो घरवालों पर चिल्लाये बिना वहाँ से नहीं जाती। अगली बार अगर खुद कूड़ा अलग नहीं किया, तो मीना ये सब साफ नहीं करेगी।

आठ: आठ महीने से उसके दोस्त जावेद को तंख्वाह नहीं मिली है, जो एक BBMP कर्मचारी है। वो अब भी रोज़ काम पर आता है और अपने मकानमालिक को बोलता है कि जैसे ही तंख्वाह मिलेगी, मैं घर का किराया दे दूंगा।

नौ: उसके परिवार के सभी लोग पौरकर्मिका के रूप में काम करते आए हैं- उसकी माँ से लेकर उसके पिता, चाचा-चाची, बुआ, मौसी, बहन-भाई, उसकी बेटी। उसके दादा--दादी भी यही काम करते थे। परिवार के सभी लोग सदियों से इसी काम से जुड़े हैं।

दस: रंजन मेमसाब को वो दस साल से जानती है। दीदी मीनाम्मा को पानी और बिस्कुट देने नीचे आती है, कुछ मिनट उससे बात करके अपने घर वापस चली जाती है। ये नंबर घड़ी में फिर घूमते हैं। सूरज अभी भी चमक रहा है।

प्रवेश वर्जित है

हाथ बंधे हुए। सिगरैट का धुआँ। सेक्स की बू। चोट।

लॉज पर एक चीखता हुआ साइरेन आकर रुकता है।

वो अपने कस्टमर का इंतज़ार कर रही है। उसे नहीं पता कि आज की रात कैसी होने वाली है। क्या वो उसके साथ अच्छे से पेश आएगा या नहीं? क्या वो गुस्सा करेगा, शांत रहेगा या तरह-तरह की मांग करेगा। जोख़िम लेना तो उसके काम का एक हिस्सा है।

वो उसे वहाँ से उठा कर ले जाता है। लॉज के अंदर- मंद रोशनी। लक्ष्मी माँ की मूर्ति के चारों तरफ LED लाइट घूमती जा रही है। लॉज में हर तरह की सुविधा मिलती है, उनका नेटवर्क ही ऐसा है। ये धंधा है उनका। वो अमीर होते जा रहे हैं, कमरे के अंदर कदम रखे बिना ही। पुलिस वाले को रिश्वत में वो मुफ्त की शराब, सिगरैट और सेक्स देते हैं, राजनेताओं के मनोरंजन के लिए वो नयी लड़कियां पहुंचाते हैं, ऑटो ड्राईवर को दलाली की तरह, वो लॉज में उसके साथ एक घंटा मुफ्त में दे देते हैं। धंधे को जारी रखने के लिए, शहर के अंदर और ज़्यादा कमरे और लॉज? दलाल हर कस्टमर से 1000 से 5000 रूपय तक लेता है।

कोई बातचीत नहीं। सिर्फ इशारों में बात होती है। कस्टमर का आधार कार्ड, फोन नंबर और पता जमा किया जाता है। पैसे पहले से ही तय हो जाते हैं। कस्टमर लॉज के मालिक को लॉज में घुसते ही पैसे दे देता है। वो चुप-चाप देखती है। वो 500 रूपय का कोंडोम का पैकेट खरीदता है। वो चुप-चाप देखती है। वो 100 रूपय का बिसलेरी का पानी खरीदता है। वो चुप-चाप देखती है। दोनों आदमी एक-दूसरे को देख कर मुस्कराते है। वो चुप-चाप देखती है।

दोपहर के ढ़ाई बजे है। आसमान बादलों से भरा है।

रूम नंबर 203। धबों से भरी चादर। पहले कई बार इस्तेमाल किए हुए कंबल। सस्ती वेल्वेट के पर्दे। लाल रंग के।

वो एक सिगरैट का डब्बा उस पर फेंक के मरता है। वो सिगरैट नहीं पीती लेकिन उसको पीना होगा। वो सिगरैट का एक कश लेती है। उसे खांसी आ जाती है। वो उसे घूर कर देखती है। वो रॉयल चैलेंज की एक बोतल खोलता है। वो उसे 90ml देता है, नीट। वो अपने ग्लास में पानी मिलाता है। इसको विस्कि पसंद नहीं, रम बहतर लगती है।

वो एक घूंट पीती है। उसे खांसी आ जाती है। वो कोंडोम खोलता है, एक गुब्बारे की तरह उसे फुला कर, कमरे में उड़ने के लिए छोड़ देता है।

गुब्बारा हौले से उड़कर उसके आगे से गुज़रता हुआ, कमरे एक कोने में पंखे की आवाज़ के साथ आगे-पीछे नाचता रहता है। वो बिना कोंडोम के उसके साथ सेक्स करने के लिए ज़बरदस्ती करता है। वो उसकी आँखों में देखती है। गुदा मैथुन और ब्लो जॉब तो इस काम के साथ आता ही है। तुरंत उसे मज़ा आता है।

वो खुदको साफ करने के लिए बाथरूम जाती है। शीशे में खुदको देखती है। उसको ऐसा महसूस होता है जैसे इस पूरे वक़्त उसे कोई और देख रहा था। वो देखती है कैमरा उसकी तरफ ही देख रहा है। वो बार-बार अपना मुँह धोती है।

वो उठता है, अपनी वर्दी पहनता है और दरवाजे को ज़ोर से भेड़ता हुआ बाहर निकल जाता है।

वो वेल्वेट के पर्दे हटाती है। अब शाम के पाँच बज चुके हैं। वो थक गयी है। धीरे से वो अपनी सलवार-कमीज़ और दुपट्टा पहनती है, काजल और हल्के गुलाबी रंग की लिप-स्टिक लगाती है, बालों को एक जुड़े में बांधती है।

वो देखती है पुलिस की गाड़ी हल्के से सीधा मुड़ के आगे बढ़ चुकी है। वो लॉज से 500 रूपय इखट्टा करती है और फिर सड़क पर जा कर खड़ी हो जाती है। इस बीच लॉज का मालिक उससे तीन गुना ज़्यादा पैसा बनाता है।

वो इसी इलाके का विधायक है। सर्कल इंस्पेक्टर। पीछा करने वाला। दलाल। कॉल सेंटर में काम करने वाला। फेरीवाला। व्यापारी। वेल्डर। ऑटो ड्राईवर। शादीशुदा आदमी। 15-16 साल का लड़का।
वो देखती है उसको, चुप-चाप, अपने करीब आते हुए।

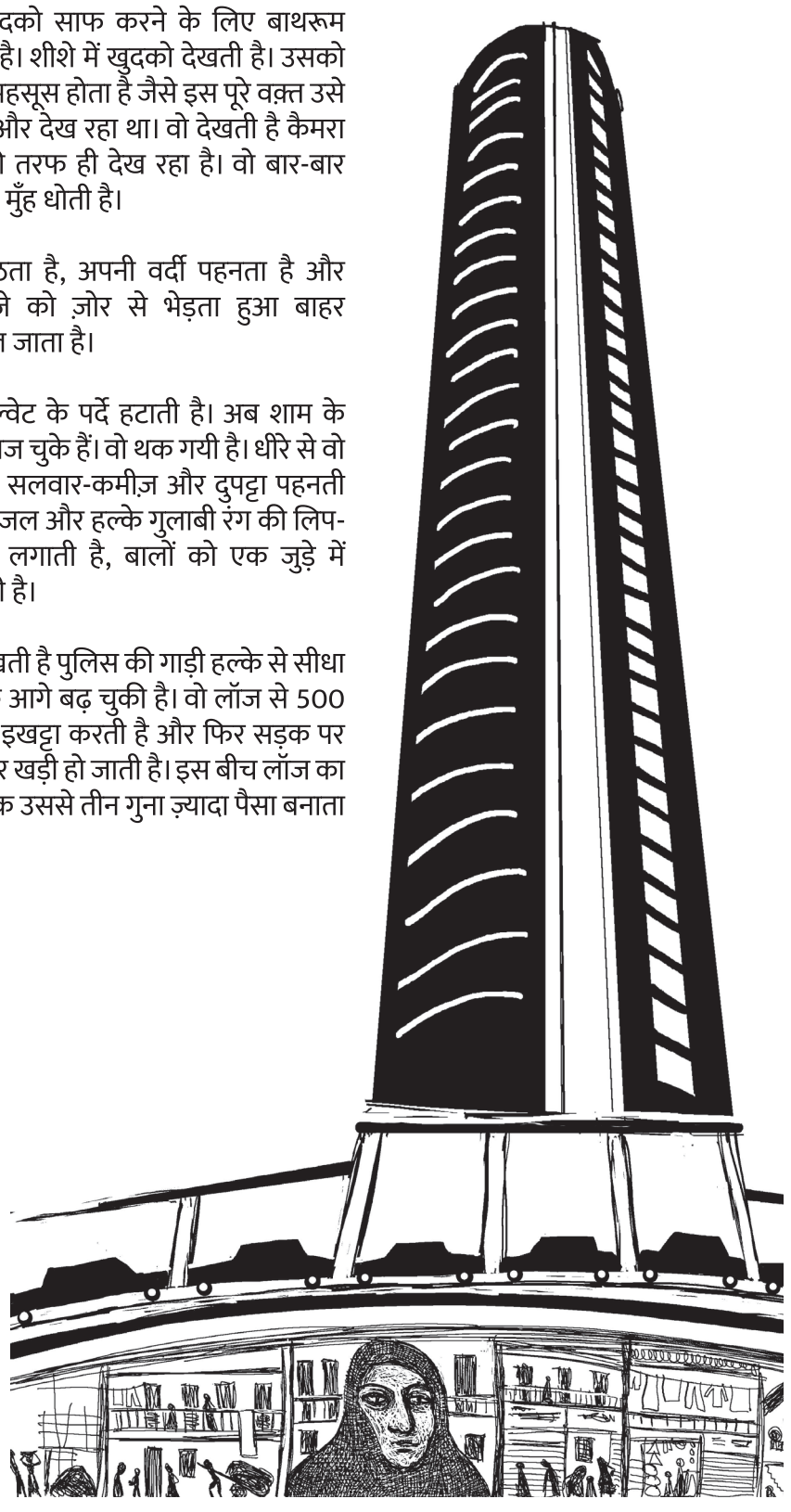

श्रद्धांजलि

ये श्रद्धांजलि समर्पित है शालू, रेवती, महादेवी और बाकी ऐसे साहसी लोगों को जिनके नाम मीडिया में कभी नहीं आता। हमे आप सबके नाम शायद न पता हों, लेकिन ऐसी आत्माओं के गुजर जाने पर हमे शोक है। ये श्रद्धांजलि एक सामूहिक शोक है और समर्पित है ट्रान्सजेंडर समुदाय और इस दुनिया में उनके अनुभवों को- एक ऐसी दुनिया जो हमारे बीच के अंतर को अपनाने में असमर्थ है। शर्म आती है कल्पना करते हुए भी जिस तरह का शोषण और भेदभाव उनको रोज़ाना इस समाज में झेलना पड़ता है। ये श्रद्धांजलि समर्पित है उनकी हंसी को, उनके लड़ने के जज़्बे को, उनके संघर्ष को। ये उनको याद करती है जिन्हे ज़िंदगी या मौत में अकेले छोड़ दिया गया : वो एक सड़क के किनारे पड़े हुए मिले, या उन्हें एक भरे बाज़ार में मौत आने तक पीटा गया, एक चलती ट्रेन के नीचे फेंका गया, या मंदिर के अंदर उनका सर काटा गया। ये श्रद्धांजलि थकी हुई आँखों से देखती है परिवार से वो सहारा जो उन्हे कभी नहीं मिला, जाति आधारित हिंसा, मकान, शिक्षा, नौकरी और सरकारी सुविधाओं तक पहुँच ना पाना; और समाज में इज़्ज़त ना मिलना।

ये समर्पित है उन साहसी लोगों को जिन्होने इस दुनिया को एक अलग तरह से देखा, प्यार किया और ज़िंदगी जी। आपकी आवाज़, आपका नाच, आपकी हंसी हमेशा हमारे बीच गूँजती रहेगी। आपकी आत्मा जहां भी हो, आप हमेशा हमे याद आते रहेंगे।

आज़ाद बेगम
30 जुलाई 2019 | रवीन्द्र कलाक्षेत्र, बैंगलोर | 6.30pm

सेक्सशुयल और जेंडर अल्पसंख्यक समुदाय के द्वारा बनाया हुआ एक बहुभाषी नाटक गायब हो चुकी ऐसी जगहों के बारे में जो सबके लिए समान थी, सबके लिए खुली थीं।

बेगम खुले स्वभाव की महिला थी। उसके महल में आने-जाने के कोई पैसे नहीं लगते थे, वहाँ किसी पर कोई निगरानी नहीं रखी जाती थी और कुछ पहनने पर रोक-टोक भी नहीं थी। वहाँ लोगों को आश्रय मिलता था, सांत्वना मिलती थी और समुदाय में एक-दूसरे पर निर्भर होने का एहसास था, बिना किसी भेदभाव के। उसकी जगह अब वहाँ खड़ा है होटल कोनार्ड। देशभर में कई शहरों की यही कहानी है।